बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-110 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मार्च 2023 | मूल्य - 5 रूपए

बाल अधिकार के क्षेत्र में बदलाव के लिए

बालकनामा को 'चिल्ड्रेन्स चैंपियन' अवार्ड का मिला सम्मान

दिल्ली बाल आयोग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सुश्री आतिशी, शिक्षा मंत्री ने दिया अवार्ड!

बालकनामा टीम श्री दीपक कुमार (ओलंपियन) को बालकनामा देते हुए

बालकनामा टीम माननीय शिक्षा मंत्री सुश्री आतिशी से चिल्ड्रैन चैंपियन अवार्ड प्राप्त करते हुए।

बालकनामा टीम श्रीमती रंजना प्रसाद (दिल्ली बाल आयोग सदस्य) को बालकनामा देते हुए

रिपोर्टर असलम, जुबेदा, संगीता आंचल, किशन

हर महीने बालकनामा के पत्रकार अलग-अलग स्थानों से सड़क एवं कामकाजी बच्चों की आवाज आप सभी तक पहुंचाते हैं और यह सभी बच्चों के लिए बहुत गर्व की बात है जब बालकनामा ने एक और मील का पत्थर हासिल किया और बालकनामा टीम को दिल्ली बाल अधिकार संरक्षण आयोग (DCPCR) द्वारा बच्चों की श्रेणी के तहत चिल्ड्रेन्स चैंपियन अवार्ड पुरस्कार और 75000 रुपए से सम्मानित किया गया। पुरस्कार सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा,ओडिशा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डॉ एस मुरलीधर और राज्य की शिक्षा मंत्री आतिशी द्वारा प्रदान किए गए। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उन व्यक्तियों और संस्थानों को

बालकनामा टीम श्रीमती रोशनी नादर (अध्यक्ष, एचसीएल टेक्नोलॉजी) को बालकनामा देते हुए

सम्मानित करता है जिन्होंने भारत में बाल अधिकारों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डीसीपीसीआर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बच्चों, न्यायविदों, पत्रकारिता शिक्षा स्वास्थ्य व पोषण और बाल संरक्षण सहित 12 श्रेणियों में चिल्ड्रन चैंपियन अवार्ड प्रदान किए गए। आतिशी ने कहा की डीसीपीसीआर का चिल्ड्रन चैंपियन अवार्ड एक अनोखा प्रयास है, जो शिक्षाविदों न्यायविदों और शिक्षकों के साथ साथ उन बच्चों के प्रयासों को भी मान्यता देता है जिन्होंने छोटी उम्र से ही अपने समुदाय के अन्य बच्चों की बेहतरी के लिए काम

बालकनामा टीम श्रीमती निधि द्विवेदी (सदस्य, दिल्ली बाल आयोग) को बालकनामा देते हुए

करना शुरू कर दिया।

बालकनामा एडिटर किशन ने कार्यक्रम के दौरान दिल्ली बाल आयोग के प्रति आभार व्यक्त करते कहा कि "यह उन सभी बच्चों के लिए बहुत गर्व की बात है जो बालकनामा का हिस्सा है और दिल्ली बाल आयोग का धन्यवाद देते है जो उन्होंने बच्चों के प्रयास को सम्मानित किया"`

बालकनामा रिपोर्टर आंचल ने सभा में उपस्थित सभी लोगों से गुजारिश किया कि "वे सभी लोग अगर देश के अलग अलग कोने में बच्चों की आवाज को आगे बढ़ाने में बालकनामा को मदद करें ताकि बच्चों के अधिकार सुनिश्चित हो सके"।

इस अवसर पर चेतना संस्था के निदेशन और बालकनामा मेंटर श्री संजय गुप्ता ने कहा, 'बाल अधिकारों के क्षेत्र में सामाजिक संस्थाओं उनके प्रयासों के लिए मान्यता देना समय की आवश्यकता है। इस तरह के आयोजनों में सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों को शामिल करने से बच्चों से संबंधित समस्याओं को हल करने की एक नई दिशा मिलेगी'। कार्यक्रम के दौरान बालकनामा टीम अपने ही जैसे अन्य ऐसे बच्चों से और संस्थाओं से मिले जिन्हे बाल अधिकार के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम करने के लिए सम्मानित किया गया। जब बालकनामा टीम ने यह खुशी बस्तियों के अन्य बच्चों के आठ साझा किया तो बच्चों में एक उमंग और नया जज्बा देखने को मिला और सभी ने दिल्ली बाल आयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

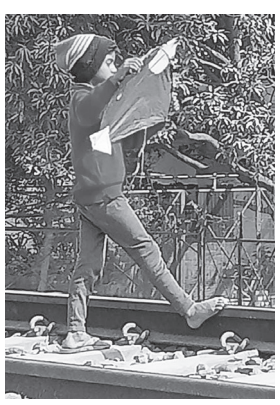

पतंग बनी शिक्षा से दूर होने का कारण

बातूनी रिपोर्टर कामनी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हम लोगों ने देखा ही होगा कि कुछ कुछ ऐसे अभिभावक भी होते हैं जो अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए जी जान लगा देते हैं और वह यह सोचते हैं कि जैसे हम मजदूरी या मेहनत करके लोगों की चार बातें सुन रहे हैं वैसे हमारे बच्चों को ना करना पड़े। आपने बच्चों को पढ़ने के लिए अगर किसी से कर्जा भी लेना पड़ता है तो वो ले लेते हैं ताकि वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पाए। कर्जे के कारण अभिभावक कोई भी काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। अभिवावकों के इतना सब करने पर कभी-कभी बच्चे गलत संगत में पड़कर गलत काम करने लगते हैं जैसे कि अनेक प्रकार का नशा करने लगते हैं,पतंग उड़ाने लगते हैं और कुछ इसी तरह के कामों में बच्चे बदल जाते हैं और पढ़ाई लिखाई छोड़ देते हैं। कुछ इसी तरह के हाल है हमारे लखनऊ के बच्चों का भी है जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने रिपोर्टर बैठक कराने के लिए गए और बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो कुछ बच्चों ने बताया कि दीदी हमारे बस्ती के कुछ ऐसे बच्चे हैं जो आजकल इतना ज्यादा पतंग में डूब गए हैं कि वह स्कूल छोड़ कर ट्रेन की पटरी पर खड़े होकर सारा दिन पतंग उड़ाते रहते हैं और अगर पतंग कटती है तो यह लोग इतनी तेज भागते हैं कि यह लोग आपने आगे पीछे भी नहीं देखते हैं कि कौन आ रहा हैं और कौन नहीं आ रहा और इस वजह से इनकी जान पर भी खतरा रहता है अगर अचानक से ट्रेन आ जाए तो उस बच्चे की जान भी जा सकती हैं। पर इस बात को जानकर भी अनजान बनते हैं और अनदेखा करते हैं ।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

दुकान हटने से बच्चों का पेट पालने में माता-पिता को आ रही हैं मुश्किलें

बातूनी रिपोर्टर माही व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अभिभावक बहुत ही मुश्किल से अपने बच्चों का पेट भर पाते हैं और बच्चों का पेट भरने के लिए छोटे से छोटा काम करने पर मजबूर हो जाते हैं। जैसे कि कोई छोटी सी दुकान लगाना, चाट या किसी फल का ठेला लगाना या कुछ इसी तरह के काम करना, जिससे उनके पास थोड़े पैसे आ सकें। इन कामों में उनके बच्चे भी मदद करते हैं, ताकि अपने परिवार का पेट भर सकें। बालाकनामा पत्रकार ने लखनऊ की बस्ती के बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की और उनकी समस्या जानने की कोशिश की। बच्चों ने बताया कि दीदी हमारी झोपड़ी तो हटा दी गई है, लेकिन जहां पर हमारे पापा दुकान, चाट या फल का ठेला लगाकर हम बच्चों का पेट चला रहे थे वह भी अब हटवा दिया गया है। जिसके कारण हम लोगों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा पैसों की दिक्कत आ गई है और काम न होने के कारण एक समय का खाना ही मिल रहा है। हम लोगों को भूखा देखकर हमारे अभिभावक को बहुत परेशानी होती ही है।

गरीबी क्या क्या नहीं दिखाती और करवाती है?

रिपोर्टर किशन

हर समय कामकाजी बच्चों के लिए काम करना ही जीवन का उद्देश्य बन गया है। बालकनामा के पत्रकार अनेक स्थान पर जाकर कामकाजी बच्चों से मुलाकात करके उनकी समस्याओं को विस्तार से आपके साथ साझा करते हैं। इस बार हमने बच्चे काम के लिए क्या-क्या नया तरीका निकालते हैं, इसके बारे में नोएडा के 45,76,115 आदि सेक्टरों में सपोर्ट ग्रुप मीटिंग के माध्यम से जाना। सपोर्ट ग्रुप मीटिंग के माध्यम से बच्चों ने अपनी समस्याओं को बताया। परिवर्तित नाम दिव्यांश ने बताते हुए कहा, मैं नोएडा में रहता हूं और मैं छठी क्लास में पढ़ रहा हूं। मेरा स्कूल का एक मित्र है और वह भी मेरी कक्षा में ही पढ़ाई करता है। जब जनवरी के महीने में कड़ाके की ठंड के कारण स्कूल में 7 दिनों का अवकाश मिला तो मैं और मेरा दोस्त घर में समय बिताने बाजय अपने पिता जी के साथ सरकारी पार्क में घास काटने के लिए जाते थे। हम सुबह के 8 बजे से लेकर शाम के 5 बजे तक घास काटने का काम करते थे और सुबह से लेकर शाम तक काम करने के बाद हमें 400 रूपए मिलते थे। इस तरह काम करके वह घर के खर्चे में अपने पिता का हाथ बंटा रहा था।

मदद करना अच्छी बात है लेकिन इसके कारण आने वाला भविष्य अंधेरे में ना पड़ जाए

ब्यूरो रिपोर्ट

हमारे बालकनामा अखबार के माध्यम से लगभग आपको यह संदेश तो मिल ही गया होगा कि जो हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे हैं, वह अपने घर को चलाने के लिए या फिर अपने अभिभावकों की मदद के लिए खुद को अर्पित करने के लिए तैयार रहते हैं। कुछ इसी प्रकार का हाल हमारे लखनऊ के सड़क एवं कामकाजी बच्चों का है जो कि अपने अभिभावकों की मदद करने में इतना मग्न हो जाते हैं कि उनका आने वाला भविष्य कैसा होगा उसकी भी परवाह नहीं करते है। जब हमारे लखनऊ के बालाकनामा पत्रकार ने कुछ ऐसे स्थानों पर विजिट की जिसके दौरान हमें देखा कि एक बच्ची दलिया बना रही थी जब हमारी उससे बातचीत हुई तो बच्चे ने बोला की दीदी हम लोग दलिया बनाने का कार्य करते है। जिसे एक रुपए मिलता है और हम लोग दिन में लगभग 40-50 दलीय बना लेते है। हमें उसी के ही अनुसार पैसे मिलते हैं। उससे बातचीत करने के दौरान यह पता चला कि कुछ बच्चे ऐसे हैं जो अपने माता पिता की मदद करने के लिए उन्हें बहुत सी चीजें करनी पड़ती है। उन्हीं में से हमे एक बच्ची मिली जो कि अपने मम्मी पापा की मदद करने के लिए उसने स्कूल जाना छोड़ दिया। जब हमारी इस बच्चे से बातचीत हुई तो उस बच्चे ने बोला की दीदी पहले हम स्कूल जाते थे लेकिन हमारे घर में कोई काम करने वाला नहीं था जिसके कारण से हमारे घर में काफी परेशानी हो रही थी जो हमसे देखा नहीं गया इसीलिए हमने पढ़ाई छोड़ कर अपनी अभिभावकों के मदद कराने में लग गए। हमने उससे यह भी पूछा कि अगर आप पढ़ाई छोड़ दोगे तो क्या आपको आपका भविष्य पता है कि क्या होगा? बच्चे ने बोला कि क्या करें दीदी हम भी तो बड़ी दुविधा में फंसे हुए हैं हमारी मम्मी सफाई का काम करते हैं कि उनके चेहरे पर उदासी छा जाती है इसको देखकर हमें अच्छा नहीं लगता है इसीलिए हमने यह निर्णय लिया कि हम पढ़ाई नहीं करेंगे और अपने मम्मी पापा की मदद करेंगे। हमसे जो बनेगा वह हम करेंगे अपने अभिभावकों को खुश रखने में उसमे चाहे हमारी पढ़ाई क्यों न छूट जाए।

एक बच्चा जब बिगड़ता है तो उसके जिम्मेदार खुद उनके अभिभावक होते हैं

बातूनी रिपोर्टर अंजलि व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

एक समझदार व्यक्ति को सही और गलत की पहचान भली-भांति होती है। लेकिन उनका क्या जिनको क्या सही या क्या गलत उसमे कोई फर्क ही नहीं दिखता है। वह जो देखते हैं वही अपने प्रतिदिन में या यूं कहें आदत में लाना शुरू कर देते हैं। कुछ किसी प्रकार का हाल हमारे लखनऊ के सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ है जो एक खराब वातावरण का शिकार हो रहे हैं जब हमारे लखनऊ के बालकनामा रिपोर्टर ने कुछ ऐसे स्थानों पर गए तो उन्होने वहां पर उन्हें अनेक प्रकार के बच्चे मिले जो कि कोई ना कोई काम कर रहे थे। वहां उनहोने कुछ ऐसे बच्चों को भी देखा माचिस के पत्ते से जुआ खेल रहे थे जब हम उनके पास गए और पूछा कि यह आप क्या कर रहे हो तो बच्चों ने बोला कि दीदी हम लोग तो गेम खेल रहे हैं पैसे लगाकर। अभी हमने पूछा कि यह किसने सिखाया आप लोगों को? तो बच्चे ने बोला कि दीदी हमे यह सीखने की जरूरत नहीं है हमारे बस्ती में हमारे पापा लोग यही खेल खेलते रहते हैं बस अंतर यह है कि वह लोग ताश खेलते हैं और हम लोग माचिस के पत्ते से खेलते हैं, और इस गेम में पैसे लगाने पड़ते हैं जो जीता है वह पैसे ले जाता है बस यही हैं इस खेल में। बच्चों की लगातार बातचीत हुई सामने आया कि इन खेलों की वजह से बच्चे पढ़ाई से दूर हो रहे हैं। जिसके कारण से बच्चे अपना भविष्य खराब कर रहे हैं। मतलब अगर हम मोटे मोटे शब्दों में बात करें तो इस आदत का बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है जिसके कारण बच्चों का पढ़ाई में मन हटता जा रहा है और जिन चीजों की तरफ उनका मन नहीं लगना चाहिए उन चीजों की तरफ आकर्षित होता जा रहा हैं जो कि आने वाले भविष्य मैं उनके लिए घातक साबित हो सकता है।

जिंदगी से जंग जीत लेंगे हम

रिपोर्टर ज्योति

आज हम आपके साथ दो ऐसे भाई -बहनो की कहानी साझा करने जा रहे है । जिसको पढ़ने के बाद आप भी इन बच्चों की हिम्मत की दाद देंगे। इन दोनों बच्चों का परिवर्तित नाम है रिहान और रिहाना जोकि उत्तराखंड के रहने वाले हैं। यह लोग काफी समय पहले गांव में जीवन यापन करने के साधनों की कमी के चलते।अपने परिवार के साथ शहर आ गए थे। कई शहरों में अच्छे काम की तलाश के बाद फिर यह नोएडा सेक्टर 62 में आकर बस गए। और यहीं पर झुग्गी बना कर रहने लगे। शुरूआत में सब कुछ थोड़ा बहुत ठीक चल रहा था। लेकिन फिर अचानक इनकी माता जी की दिमागी हालत खराब होने लगी। और वह धीरे-धीरे मानसिक रोगी बन गई। हालाकी इन बच्चों के परिवार वालों ने उनका कई सरकारी अस्पतालों में इलाज कराया परंतु सभी पर्यतन करने के बावजूद भी आज भी इनकी माता की स्थिति जैसी की तैसी ही बनी हुई है। क्योंकि पिताजी मजदूरी करने जाते थे। और माताजी दिमागी रूप से बीमार थी। जिस वजह से वह कई बार अजीब अजीब काम करने लगती थी। या फिर सामान यहां वहां फेंकने लगती थी। कभी-कभी तो वह घर से निकल जाती थी। और ना जाने अपनी धुन में कहां चलने लगती थी। और यह बच्चे काफी छोटे होने की वजह से अपनी माता को रोक नही पाते थे। और उनकी इस हालत को देखकर काफी ज्यादा सहम और डर जाते थे। इन्हीं सब वजहों की वजह से बच्चों की नानी जिनकी उम्र 60 वर्ष से भी ज्यादा है।इनके साथ रहने लगी और वही इन बच्चों का तथा इनकी बीमार माताजी का ख्याल रखने लगी। दोनों बहन भाई अपनी नानी के साथ लक्कड़ चुनकर लाना,बर्तन धुलवाना, कपड़े धुलवाना, खाना बनाना या फिर छोटे बहन भाइयों का ख्याल रखना। जैसे सभी तरह के कामों में हाथ बढ़ाते हैं।शुरूआत में यह बच्चे स्कूल जाया करते थे। लेकिन इन सब उतार-चढ़ाव की वजह से बच्चों का स्कूल भी छूट गया। अब इनकी नानी एवं पिता ने दोबारा से बच्चों का स्कूल में दाखिला कराने का सोचा तो कई तरह के नियम और कानून उन्हें बताए जाने लगे। जिस वजह से यह लोग बच्चों का स्कूल में दाखिला नहीं करा पा रहे हैं। लेकिन फिर नन्हे परिंदे बस के कार्यकर्ता एक दिन इन दोनों बच्चों से मिले। और नन्हे परिंदे बस के विषय में बताया। एवं उन्हें अपने साथ बस पर लाकर विजिट भी कराई गई। साथ ही उनकी नानी को भी समझाया गया। कि जब तक स्कूल में दाखिला नहीं हो जाता। तब तक आप इन दोनों बच्चों को बस पर पढ़ाई लिखाई करने के लिए भेजा करें। कार्यकर्ता ने बच्चो की नानी को सही सलाह देकर आने वाले सत्र में दोनों बच्चों का स्कूल में दाखिला करवाने का आश्वासन भी दिया है। इसके साथ ही दोनों बच्चे नन्हे परिंदे की बस पर पढ़ाई लिखाई करने आने लगे। यह दोनों बहन भाई काफी चंचल और हंसमुख स्वभाव के हैं। कोई भी व्यक्ति इनसे मिलने के बाद यह नहीं पता लगा सकता है कि यह बच्चे इतनी ज्यादा गंभीर परिस्थितियों में रहते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

मजबूरी के कारण दिनभर बकरियां चराने को मजबूर बच्चे

रिपोर्टर किशन

हमारे पत्रकारों ने देखा दिल्ली की अनेक झुग्गी बस्तियों में बहुत से बच्चे बकरियां चरा रहे थे। झुग्गी बस्ती के बगल में ही रेलवे लाइन भी है। पत्रकारों ने देखा बच्चे बकरी चराने के लिए बहुत परेशानियों से जूझ रहे हैं। पत्रकारों ने उन बच्चों से बात करके उनकी परेशानियों के बारे में जाना। बच्चों ने बताया कि झुग्गी बस्ती में लगभग 25 से 30 बच्चे हैं जो बकरियां चराने का काम करते हैं। झुग्गी बस्ती में अधिकतर ऐसे बच्चे हैं जो स्कूल भी जाते हैं। वह सुबह के समय स्कूल चले जाते हैं और दोपहर में स्कूल से आने के बाद खानापीना खाकर फिर बकरी चराने के लिए जाते हैं। जो बच्चे स्कूल नहीं जाते वह सुबह से ही बकरी चराने के लिए निकल जाते हैं। यह बच्चे अपने आसपास के जंगलों में बकरी चराने के लिए जाते हैं। जब बकरियों को भूख लगती है तो यह बच्चे अपने हाथ में एक लंबी सी दंडी लेकर रखते हैं और बकरी को पीपल के पत्ते और घास खिलाते हैं। पीपल के पेड़ में डंडा मारकर पत्ते तोड़ते हैं। पत्ते तोड़ने के बाद कुछ बकरियां खा लेती हैं और फिर जो बचते हैं वह घर भी ले जाते हैं। रास्ते में जब बकरी को प्यास लगती है तो यह बच्चे अपने हाथ में एक बाल्टी भी लेकर जाते हैं और झुग्गी बस्ती के बगल में रेलवे पटरी भी है और उस स्थान पर रेलगाड़ी की सफाई भी होती है। प्लेटफार्म की और जाकर अंदर पानी का भी बंदोबस्त है तो यह बच्चे उधर से पानी लेकर आ जाते हैं और बकरी को पीला देते हैं। इन बच्चों को समस्या उस समय आती है कि बकरी अधिक होती है और बकरी इधर-उधर भागने लगती है। जिस दौरान बकरी प्लेटफॉर्म के अंदर पानी पीने के लिए खुद चली जाती हैं तो प्लेटफार्म का कर्मचारी बकरियों को अंदर देखकर उनको पत्थर मारने लगता है और भगाने लगता है। और बकरियां ना भागने पर हम लोगों को बुरी तरह से मारने लगता है। हमें उस जगह से पानी मिलता है इस कारण कुछ नहीं कह पाते। यह बच्चे इन बकरियों का दूध भी बेचा करते हैं और ईद, बकरा ईद के महोत्सव पर बकरे भी बेचा करते हैं। इसी से इनकी कमाई हो जाती है और उसी कमाई से और दूध के पैसों से इनके घर का गुजारा चलता है।

कोई उपयुक्त साफ स्थान न होने के कारण गन्दी जगहों पर धोने पड़ते हैं घर के बर्तन

ब्यूरो रिपोर्ट

हमारे बालकनामा के पत्रकार अलग-अलग स्थानों पर विजिट करते हैं, ताकि वो बच्चों की समस्याओं को जान सकें और आप तक पहुंचा सकें। इस प्रकार हम उनकी समस्याओं का हल निकालने में भी सहयोग करते हैं। विजिट के दौरान जब बच्चों से मिलते हैं और उनसे बात करते हैं तो बच्चे अपनी समस्याएं बताते समय काफी भावुक भी हो जाते हैं, लेकिन वह अपनी समस्याओं से कभी भागते नहीं हैं। क्योंकि उनको पता है कि इसी के साथ उनको अपना जीवन बिताना है। जैसे कि हमने अपने बालकनामा अखबार के पिछले अंकों में आपको जानकारी दी है कि बच्चों के घरों में गैस सिलेंडर ना होने के कारण उन्हें चूल्हे पर खाना बनाना पड़ता है। जब चूल्हे पर खाना बनता है तो बर्तन बहुत जल जाते हैं जिसके कारण इतने जले बर्तन साफ करने से बच्चों के हाथ काले हो जाते हैं और फटने लगते हैं। इसके साथ ही इन बच्चों के पास इन बर्तनों को साफ करने के लिए कोई निश्चित जगह नहीं होती है। हमारे बालकनामा के पत्रकार ने विजिट के दौरान देखा कि एक बच्ची अपनी झोपड़ी के सामने बर्तन धो रही थी। जब हम उसके पास गए और उस बच्ची से बात की तो उसने बताया कि दीदी वैसे तो हमारे पास बहुत सारी समस्याएं हैं, लेकिन जो समस्या हमें हर रोज होती है वह बर्तन साफ करने की है। हमारी बस्ती में ऐसा कोई साफ-सुथरा निश्चित स्थान नहीं है, जहां पर हम लोग बर्तन धो सकें इसीलिए हमें बहुत दिक्कतें होती हैं। बच्ची ने यह भी बताया कि दीदी जहां हम बर्तन साफ करते हैं वहां पर बहुत गंदगी होती है क्योंकि दुनियाभर का कूड़ा करकट और छोटे छोटे कुत्ते के बच्चे कहीं पर भी लैट्रिन, टॉयलेट करके चले जाते हैं और हमें उसी जगह को साफ करके वहाँ बर्तन धोने पड़ते हैं। इतनी गंदगी में हम लोग बर्तन धोते हैं, यह सोचकर बहुत बुरा लगता है और सोचते हैं कि कहीं हमें कोई बीमारी ना हो जाए?

बच्चों ने लगाई फुट ओवर ब्रिज बनाने की गुहार

ब्यूरो रिपोर्ट

शिक्षा हमारे भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन शिक्षा पाने के लिए बहुत परेशानियों से जूझना पड़ता है। ऐसी अनेक परेशानियों से हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे जूझते हैं। आज हम एक ऐसी कठिनाई के बारे में आपको बताने जा रहे हैं जिस कठिनाई का बच्चे रोज सामना करते हैं। दिल्ली की रेल पटरी के बगल में अनेक झुग्गियां हैं और यहां के बच्चे रोजा स्कूल जाते हैं।

झुग्गी में रहने वाले कुछ बच्चों से पत्रकारों ने बात की तो 14 वर्षीय बालिका ने कहा कि हम झुग्गी बस्ती में अपने माता पिता के साथ रहते हैं और बगल से ही रेल पटरी भी गुजर रही है। हम बच्चे रोजा सुबह स्कूल जाते हैं और स्कूल का समय सुबह के 8 बजे से लेकर दोपहर के 2 बजे तक का है। हमारे झुग्गी बस्ती के बगल में रेल पटरी होने से हर 5 मिनट में रेलगाड़ी निकलती रहती है। कुछ कुछ रेलगाड़ी तुरंत चली जाती हैं और कुछ रेलगाड़ी 1 घंटे से अधिक रुक जाती है। समस्या यह आती है की रेल पटरी के बगल एवं अधिक दूर दूर तक कोई फुटओवर ब्रिज नहीं है। सुबह के समय जब हम बच्चे अपने स्कूल जाने के लिए तैयार रहते हैं तो कभी कभी रेलगाड़ी 1 घंटे से अधिक देर तक खड़ी रहती हैं। बड़े लोग एवं बच्चे गाड़ी के नीचे से निकल के भी चले जाते हैं और कुछ बच्चे रेलगाड़ी जाने का इंतजार करते हैं। लेकिन देर तक खड़े होने के बावजूद भी हम पैदल चलकर ट्रेन के नीचे से ना निकल कर ट्रेन के लास्ट डिब्बे तक जाकर रेल की पटरी पार करने का प्रयास करते हैं।

परंतु रेल इतनी बड़ी होती है कि 2 किलोमीटर चल कर भी ट्रेन के डब्बे खत्म नहीं हो पाते। इस कारण अधिकतर बच्चे स्कूल जाने के लिए काफी लेट हो जाते हैं। जब बच्चे रेल गाड़ी के नीचे से निकलने का प्रयास करते हैं तो कभी-कभी बच्चों के साथ खतरनाक हादसे भी हो जाते हैं।

11 वर्षीय बालिकाओं ने बताते हुए कहा कि हमारे घर के बगल में ही एक मेरी सहेली थी जो रोज मेरे साथ स्कूल जाती थी। एक दिन वह स्कूल से घर की ओर आ रही थी और वह भी रेल गाड़ी के नीचे से निकलने का प्रयास कर रही थी। उसी दौरान रेलगाड़ी चल पड़ी और सहेली की ट्रेन से कटकर मृत्यु हो गई। हम बच्चों का यह कहना है कि रोजाना ऐसे हादसे देखने के लिए मिलते हैं। हम चाहते हैं कि इस स्थान पर फुट ओवर ब्रिज बन जाए, ताकि हम बच्चों को एवं झुग्गी बस्ती में रहने वाले व्यक्ति लोगों को इस परेशानी का सामना ना करना पड़े।

भगवान भरोसे है हमारा भविष्य

कल की छोड़ आज में जीना सीख गए हैं हम बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

समय बहुत ही कमाल का होता है। कल किसने देखा है और किसी को पता ही नहीं होता कि कल क्या होने वाला है? इसलिए हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे कल की चिंता नहीं करते। बच्चों के पास इतना काम हो गया है कि उनको समय ही नहीं मिलता कि वह अपने बारे में सोच सकें कि वह क्या करना चाहते हैं या जीवन में क्या बनना चाहते हैं ? बहुत से बच्चों के सपने उनके सपने बनकर ही रह गए हैं और वो जानते हैं कि उनके सपने पूरे नहीं हो पाएंगे? लखनऊ की बालकनामा पत्रकार ने विजिट के दौरान बच्चों से पूछा कि अगर वह पढ़ने जाते हैं तो वह पढ़ लिख कर क्या बनना चाहेंगे? बच्चों ने अपने सपने के बारे में बताते हुए कहा कि दीदी मैं पुलिस बनना चाहूंगा, किसी ने कहा मैं टीचर या डॉक्टर बनना चाहूंगा। साथी हमने उन बच्चों से भी बातचीत की, जिनकी उम्र 14 -15 साल की है। हमने उनसे पूछा कि अगर आपको पढ़ने का मौका मिले तो क्या आप पढ़ना चाहोगे ? बच्चों ने अपनी भावनाओं को साझा करते हुए कि दीदी आपको क्या लगता है कि हमारी उम्र अब 14 साल की हो गई है तो क्या हम आगे बढ़ पाएंगे? पत्रकार ने उनसे कहा कि क्यों नहीं ?

पढ़ने लिखने की कोई उम्र नहीं होती है और आप कभी भी पढ़ाई कर सकते हो, इसमें उम्र का क्या विषय हैं। बच्चों ने बोला कि दीदी हमें तो अभी उम्मीद भी नहीं है कि हम पढ़ लिखकर कुछ बनेंगे। क्योंकि दीदी एक वह भी समय था जब हम लोग पढ़ने लिखने जाते थे, लेकिन कोरोना महामारी ने हम जैसे लाखों बच्चों से उनका भविष्य छीन लिया।

उस समय हम लोग मन लगाकर पढ़ाई करते थे, लेकिन महामारी ने हमें ऐसे अपने चक्रव्यूह में फंसाया जिसके कारण अब शायद हम लोग पढ़ाई नहीं कर पाए। जो भी हो दीदी अब तो हमें यह यकीन है कि हम पढ़ाई में भाग नहीं ले पाएंगे, बाकी आगे भगवान मालिक।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

शौचालय में नशेड़ियों का दबदबा

शौच के लिए आने-जाने वाले बच्चों से छीन लेते हैं सामान और करते हैं परेशान

रिपोर्टर किशन

जैसा कि आप जानते हैं हम बालकनामा अखबार की खबरों में शौचालय से संबंधित खबर जरूर बताते हैं। लेकिन शौचालय होने के बावजूद भी झुग्गी बस्ती में रहने वाले कामकाजी बच्चों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। पत्रकार झुग्गी बस्ती के कुछ बच्चों से मिले और बात की तो बच्चों ने बताया कि शौचालय होने के बावजूद भी हम लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। परिवर्तित नाम देवेंद्र ने बताया कि वह अपने पूरे परिवार के साथ दिल्ली में रहता है। देवेंद्र के पिताजी फैक्ट्री में बर्तन पैक करने का कामकाज करते हैं। माताजी कोठी में काम करती है और देवेंद्र छठी कक्षा में पढ़ाई कर रहा है। देवेंद्र ने विस्तार से बताते हुए कहा कि हम किराए के कमरे में रहते हैं और घर में शौचालय की कोई सुविधा नहीं हैं। घर से थोड़ी देर आगे एक सरकारी शौचालय बना हुआ है। इस शौचालय में पूरी बस्ती के लोग शौच करने के लिए जाते हैं। जब हम शौच करने के लिए जाते हैं तो शौचालय के बाहर कुछ नशेड़ी लोग खड़े रहते हैं। वह लोग इतना नशे में डूबे रहते हैं कि उन्हें अपना ही होश नहीं रहता। वह नशेड़ी लोग शौचालय में आते जाते बच्चों को पकड़ लेते हैं और जिस बच्चे की जेब में जितने पैसे या कोई अन्य चीज देख लेते हैं उसे छीन लेते हैं। पहले तो प्यार से पैसे मांगते हैं, ना देने पर वह मारपीट पर उतर आते हैं। जब ना देने पर छोड़ भी देते देते हैं तो जब बच्चे शौचालय में शौच कर रहे होते हैं तो बाहर से दरवाजे की कुंडी लगा देते हैं और दरवाजे के नीचे से पानी हमारे पर मारते रहते हैं। और हद तो तब हो जाती है जब नीचे से डंडा मारना शुरू कर देते हैं। हम चिल्लाने के अलावा कुछ नहीं कर पाते। यदि ज्यादा करेंगे तो और मारपीट करने लगते हैं। शौचालय का मालिक भी कुछ नहीं कर पाता। यदि वह कुछ बोलता हैं तो ये लोग उसके साथ भी हाथापाई करने पर उतर आते हैं। पुलिस को शिकायत करने पर ये वहां से भाग जाते हैं।

लोगों के तानों ने किया बच्चों को शिक्षा से दूर

बातूनी रिपोर्टर कामिनी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

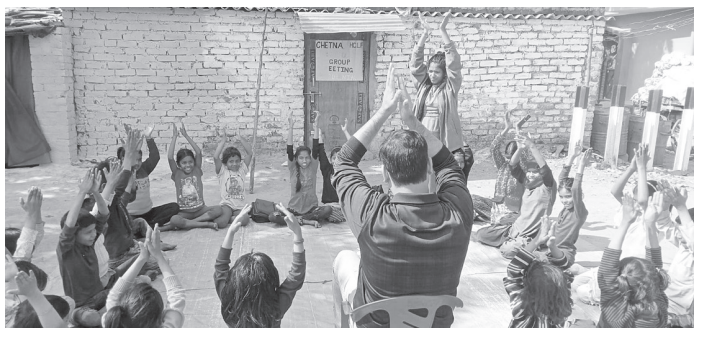

जैसा कि यह बात तो हम सभी लोग जानते हैं कि हर एक बच्चा चाहता है कि उसको शिक्षा प्राप्त करने के लिए सहयोग मिले। उनको सहयोग मिलता भी है, लेकिन यह सिर्फ लड़कों को ही मिलता है और लड़कियों को यह मौका नहीं मिलाटा है। उनको पढ़ने की बजाय और कई अनेक प्रकार के कामों को करने के लिए कहा जाता है। यह लड़कियां ज्यादातर सड़क एवं कामकाजी बच्चियां होती हैं। उनके घरवाले बड़ी मुश्किल से उनको पढ़ाने के लिए मानते हैं। यदि घरवालों ने उनको स्कूल भेजना भी शुरू कर दिया तो बस्ती वाले ताना मारना शुरू कर देते हैं कि आगे चल कर काम वही करना हैं जो हम कर रहे हैं। इतनी बड़ी हो गई है फिर भी पढ़ाई करती है, यह नहीं कि अपने अभिभावक के काम में मदद करें। कुछ इसी तरह के हाल हमारे लखनऊ की बस्ती के बच्चों का भी है। जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने लखनऊ के बस्ती के बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराई तो बच्चों ने बताया कि दीदी एक तो हमारे अभिभावक बड़ी ही मुश्किल से पढ़ाने के लिए मानते हैं। लेकिन बस्ती के कुछ लोग अगर हमें स्कूल जाते हुए देखते हैं तो ताना मरना शुरू कर देते हैं कि इतनी बड़ी हो गई है और अभी भी पढ़ाई कर रही है, यह नहीं कि अपने माता पिता की मदद करवा ले और तो और घरवालों को भी भड़काने लगते हैं कि हमारी पढ़ाई छूट जाए। कुछ बच्चों के अभिभावक उनकी बात पर यकीन भी कर लेते हैं, लेकिन कुछ बच्चों के अभिभावक उनकी बातों पर ध्यान नहीं देते और वह अपने बच्चों को स्कूल भेजते हैं। इस तरह वह बच्चे अपनी पढ़ाई पूरी कर लेते हैं, लेकिन जिनको सपोर्ट नहीं मिलता है वह बच्चे अपनी शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाते हैं।

किडनैपर के चंगुल से बच निकला देव

अपनी बुद्धिमत्ता से सुरक्षित पंहुचा अपने घर

ब्यूरो रिपोर्ट

क्या आप जानते हैं बच्चों को लुभाने और किडनैप करने के लिए क्या ट्रिक अजमाते हैं किडनैपर? भारत के हर एक कोने से रोजाना बच्चे किडनैप होने की खबर आती रहती है। वास्तव में किडनैपर ताक में रहते हैं कि कब उन्हें मौका मिले और वह बच्चे को किडनैप कर ले। इसीलिए सतर्क रहना जरूरी है। हम आपको कुछ ऐसे तरीके बता रहे हैं जिन्हें किडनैपर बच्चों को किडनैप करने के लिए जरूर आजमाते हैं। किडनैपर बच्चों को नए गैजेट्स दिखाकर या उन्हें गेम और वीडियो का लालच देकर आकर्षित करने की कोशिश करते हैं और मौका मिलते ही उन्हें किडनैप कर लेते हैं। खाने की चीजें बच्चों को बहुत पसंद होती हैं, किडनैपर उन्हें खाने की चीजें दिखाकर भी आकर्षित करते हैं। आपको अपने बच्चों को इस तरह के खतरों से अवगत करना चाहिए। इसके अलावा बच्चे को अकेला ना छोड़े और बच्चों का स्वयं ध्यान रखें। अब हम आपको जो यह घटना बताने जा रहे हैं शायद इसे पढ़कर आपके कान खड़े हो जाएं।

यह खबर दिल्ली के कीर्ति नगर थाने के आसपास की है। कीर्ति नगर में रह रहा 8 वर्षीय देव (परिवर्तित नाम) अपने माता पिता के साथ कीर्ति नगर में रहता है। वैसे वह बिहार पटना जिला का रहने वाला है। देव के घर में देव के दो भाई, एक बहन और माता-पिता

हैं। देव के माता पिता और बड़ा भाई कीर्ति नगर थाने के आसपास खाने की ठेली लगाते हैं और उसी से घर का खर्चा चलाते हैं। देव का बड़ा भाई 14 वर्ष का है पूरे दिन में कुछ समय के लिए देव के पिताजी और माताजी देव और देव के बड़े भाई को रेडी पर खड़ा कर देते हैं। एक दिन जान ना पहचान वाला व्यक्ति रेडी पर आकर देव के बड़े भाई से कहने लगा कि हम आपके पापा को जानते हैं और रोज खाना खाने आते हैं। हमें उनका नंबर दे दीजिए। देव के बड़े भाई ने बिना कुछ सोचे समझे उस व्यक्ति को नंबर दे दिया और वह रेडी पर खाना खाकर और पैसे देकर चला गया। देव और देव की बहन भी रोजाना स्कूल जाते हैं। देव की माताजी सुबह के ८ बजे घर से रेडी लेकर अपने काम के लिए निकल जाती हैं। सुबह का नाश्ता देव की माता जी घर पर ही बना देती हैं और देव और देव की बहन नाश्ता करके स्कूल चले जाते हैं। लेकिन दोपहर का खाना माताजी घर पर नहीं बनाती है और देव और देव की बहन को दोपहर में रेडी पर आकर खाना पड़ता है। एक दिन देव दोपहर में खाना खाने के लिए रेडी पर आ रहा था पर रास्ते में कुछ ऐसा हुआ जिसे सुनकर आप भी परेशान हो जाएंगे। रास्ते में देव को किडनैपर ने पीछे से किडनैप कर लिया। देव के मुंह पर हनुमान का मास्क लगाकर देव को गाड़ी में बिठा कर काफी दूर ले गए। किडनैपर वह था जो देव के बड़े भाई से पिताजी का नंबर लेकर गया था। देव के घरवालों को कुछ भी पता नहीं था कि देव कहां है। जब देव की बहन रेडी पर माता पिता के पास पहुंची तो तब जाकर पता चला कि देव लापता है। जो किडनैपर देव को ले गया था, उसने देव को एक पार्क में ले जाकर बिठा रखा था और देव से कहने लगा कि मेरे पास तेरे पिताजी का नंबर है और उन्हें कह दो लाख रुपए लेकर आ जाएं। देव ने कहा आप ही बात कर लो। यह सुनते ही उसने पिता को फोन लगाकर कहा कि तेरा बेटा मेरे हवाले हैं और दो लाख रुपए लेकर आ जाओ। देव के घरवाले काफी परेशान हो गए और करे तो क्या करें इतने पैसे भी नहीं थे उनके पास। तब उन्होंने कीर्ति नगर थाने में जाकर शिकायत दर्ज करवाई और पूरी कहानी पुलिस ऑफिसर को बताई। इस दौरान पुलिस ऑफिसर ने किडनैपर का फोन नंबर ही टैप कर लिया। जब तक पुलिस वालों ने उनका फोन ट्रैक करा तब तक काफी देर हो चुकी थी और रात के १२ बज चुके थे। किडनैपर को पता चला कि कोई नहीं आने वाला तो उन्होंने देव को रात में 12 ऐसे ही खुली सड़क पर छोड़ दिया। देव बहुत बुद्धिमान था और देव ने किसी साइकल वाले से मदद मांगी और कहा कि आप मुझे इस स्थान पर छोड़ दो मैं आपको 50 दे दूंगा। उस व्यक्ति ने देव की मदद की और उसे घर पहुंचा दिया। देव ने उस साइकल वाले व्यक्ति को पिता जी से पैसे दिलवाए और उसका धन्यवाद किया। देव के घर आने के बाद यह जानकारी देव के पिता जी ने थाने में जाकर दी कि देव सुरक्षित घर आ गया है। तब पुलिस वालों ने किडनैपर का फोन ट्रैक कर रखा ही था और कुछ देर में किडनैपर भी पकड़ा गया।

शादियों का सीजन आने से बच्चे होते हैं खुश, शादियों में ढोल बजाने के साथ साथ उनको अच्छा अच्छा खाना भी मिलता है

रिपोर्टर किशन

अक्टूबर से लेकर अप्रैल के महीने तक शादियों का सीजन रहता हैं। जो शादी बरात में ढोल बजाने का काम करते हैं, उनके पास इतनी सारी बुकिंग आ जाती है कि वह 1 मिनट का समय नहीं निकाल पाते। लेकिन जब यह शादी बरात में जाते हैं तो इनको बहुत साडी परेशानियों से गुजरना पड़ता है।10 वर्षीय परिवर्तित नाम अरुण ने बताया कि उसके घर में एक बहन, दो भाई और मम्मी-पापा हैं। यह झुग्गी में रह कर शादी बरातों में ढोल बजाने का काम करते हैं। इस समय शादी के सीजन चल रहे हैं और शादी में हम लोगों के पास महीने भर से पहले से ही बुकिंग आ जाती हैं, ताकि ढोल वाले पहले से बुक ना हो जाएं। हम ढोल बजाने शादी बरात में जब जाते हैं तो उस समय हमारे पास ज्यादा बुकिंग होती हैं। यदि एक दो बुकिंग होतो हैं तो पापा चले जाते हैं, लेकिन जब ज्यादा बुकिंग होती हैं तो हमें भी

जाना पड़ता हैं। जब हम शादी बरात में ढोल बजा रहे होते हैं तो कुछ बराती जो दारू पीकर नाच रहे होते हैं, वह ऐसे नाचते हैं कि उनके नाचने से हमें चोट भी लग जाती है। वह शराब के नशे में हम लोगों से ढोल लेकर खुद भी बजाने लगते हैं और हम कुछ नहीं कह पाते। हम जब ढोल बजाते हैं तो शादी में पैसे भी काफी लुटाए जाते हैं, जो हम भी लूट लेते हैं और वह हमारा रोज का खर्चा निकल जाता है। हमें शादी बरात में जाने में अच्छा भी लगता है और हम सोचते हैं कि शादी के सीजन जल्दी जल्दी आए क्योंकि हमें वहां पर अच्छा-अच्छा खाने के लिए भी मिलता है। ऐसा खाना हम अपने घर पर कभी भी नहीं खा पाते। समस्या पैसे देने की बारी में आती है, जब उन्हें हमारे काम के पैसे देने पड़ते हैं तो वो बहुत नौटंकी करते हैं और हकई लोगों से तो इस कारण लड़ाई झगड़े भी हो जाते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बढ़ती जनसंख्या से गरीबी का शिकार हो रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

सभी बच्चे अपनी छोटी-मोटी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। वह खुद की किसी से तुलना नहीं करते हैं और जितना है उतने में ही खुश रहते हैं। कुछ इसी प्रकार की सोच लेकर हमारे कामकाजी बच्चे जी रहे हैं। लखनऊ के बालकनामा पत्रकार ने विजिट के दौरान कुछ बच्चों से बातचीत की और उनसे यह भी पूछा कि अगर आपको अपनी इच्छाएं पूरी करने का मौका मिले तो आप क्या-क्या करना चाहोगे? बच्चों ने कहा कि दीदी सबसे पहले हम एक अच्छा सा घर लेंगे, जिसमें हम हमारे परिवार रह सके। साथ ही जो हमारी इच्छाएं हैं जैसे- अच्छी चीजें खाना, चॉकलेट, आइसक्रीम खाना, अपने शौक के लिए छोटी साइकिल चलाना ये सब करना चाहेंगे। लेकिन दीदी शायद ही यह सब संभव हो पाएगा? क्योंकि बहुत ही मुश्किल से हमारे अभिभावकों कम बजट में घर का खर्चा चलाते हैं, फिर वो हमारी यह सब ख्वाहिशों को कैसे पूरा कर पाएंगे। एक बच्चा बड़ी सी साइकिल चला रहा था। जब हमने उस बच्चे से पूछा कि आप कहां से आ रहे हो? तो उस बच्चे ने बताया कि दीदी हम साइकिल सीखने गए थे। तभी हमने पूछा कि यह तो बड़े लोग की साइकिल है इससे आपको चोट भी लग सकती है तो उस बच्चे ने बोला कि दीदी बस शौक के लिए चलाने जाते हैं। क्योंकि हमारे पास इससे छोटी कोई साइकिल नहीं है, जिसको हम चला सके। इसलिए पापा की साइकिल लेकर जाते हैं और उसे ही चला कर अपना मन भर लेते हैं और घर चले जाते हैं। दिन पर दिन जनसंख्या बढ़ने के कारण गरीबी बच्चों को अपनी चपेट में ले रही है, जिनका इसमें कोई कुसूर भी नहीं है। उन बच्चों को वह सब दिन देखने पड़ रहे हैं जिनकी वह हकदार भी नहीं है। सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने भविष्य से भटक रहे हैं। जिस उम्र में उन्हें पढ़ाई करनी चाहिए, उस उम्र में वे दूसरों के सामने हाथ फैलाने को मजबूर हैं।

कैसे करें अपनी ख्वाहिशों को पूरा?

बातूनी रिपोटर नूरजहां व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों की कोई भी ख्वाहिश पूरी नहीं हो पाती है, जिसके कारण वह चोरी करना, भीख मांगना या कूड़ा कबाड़ा बीनना शुरू कर देते हैं। अगर उनको कुछ खाने का मन होता है तो वह खा नहीं पाते हैं, कुछ पहनने का मन होता तो पहन नहीं पाते, जिसके कारण वह स्कूल छोड़कर काम करना या चोरी करना शुरू कर देते हैं। इसी तरह के हाल हमारे लखनऊ के बस्ती के बच्चों का भी है। जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने कम्युनिटी विजिट करने गए तो देखा कि ८-9 साल के बच्चे कूड़ा कबाड़ा बीन रह थे। जब उन बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो बच्चों ने बताया कि दीदी हम स्कूल नहीं जाते हैं। हम लोग यही काम करते रहते हैं ताकि थोड़ा बहुत पैसे मिल जाए तो हमारा जब चॉकलेट या फिर जो भी खाने का मन करे तो हम वो खा सकें। क्योंकि हमारे अभिभावक के पास उतना पास नहीं होता कि वह हमारी छोटी सी ख्वाइशों को पूरा कर सके। इसी कारण वो हम लोगों को पैसे नहीं दे पाते। जिसके कारण हमें यह काम करना पड़ता है। हमें मजबूरी में यह काम करना पड़ता है ताकि अगर हमारा कुछ खाने का मन करे तो हम खा सकें।

बाल मजदूर से कब मुक्त होंगे बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

जब मैं स्कूल से जब जाती हूं तो बच्चों को काम करते हुए देखती हूं। ये बच्चे अपने माता-पिता की गैर जिम्मेदारी की वजह से यह काम करते हैं। अपना फायदा बढ़ाने के लिए मालिकों द्वारा जबरदस्ती बनाए गए दबाव की वजह से इनको रात दिन काम करना पड़ता है। ये बच्चे बाल मजदूरी करने को मजबूर हैं। इनका बचपन काम में ही बीता जा रहा है और यह ये जीवन जीने को मजबूर हैं। हमारे देश के साथ ही विदेशों में भी बाल मजदूरी एक बड़ा मुद्दा है, जिसके बारे में सभी को जागरूक होना चाहिए है। बचपन में उनका अच्छा भरण-पोषण हो यह उनका अधिकार है और माता पिता से प्यार और देखभाल उनको मिलना चाहिए। इस प्रकार गैरकानूनी तरीके से बच्चों को बड़ों की तरह काम करवाना गलत है। इसके कारण बच्चों को शिक्षा और अन्य अधिकारों से वंचित रहना पड़ता है। वो अपने बचपन के प्यारे लम्हों से दूर हो जाते हैं और जो हर एक के जीवन का सबसे यादगार और खुशनुमा पल होता है। यह किसी बच्चे के नियमित स्कूल जाने की क्षमता को बाधित करता है।

स्कूल न जाकर पूरा दिन कंचे खेलने की बुरी लत में फंसे कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्ट अंजलि व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

खेलने के नाम पर हर बच्चा तैयार हो जाता है, लेकिन स्कूल के नाम से हर बच्चा भागता है कि उन्हें स्कूल ना जाना पड़े। कुछ बच्चे तो ऐसे हैं जो खुद से तैयार होकर स्कूल चले जाते हैं, लेकिन कुछ बच्चों के अभिभावक उनके पीछे पड़ते हैं तब जाकर वह स्कूल जाते हैं। जो बच्चे स्कूल नहीं जाते उनको घर में रहकर खेलते रहते हैं। हमारे बालकनामा पत्रकार ने लखनऊ में रिपोर्टर बैठक के दौरान बच्चों से बातचीत की तो कुछ बच्चों ने बताया कि दीदी यहां के कई सारे बच्चे

ऐसे हैं जो सारा दिन कंचे खेलते रहते हैं और स्कूल नहीं जाते हैं। जब हम उनको स्कूल जाने के लिए बोलते हैं तो वह झूठ बोल देते हैं कि उनके घर में कोई नहीं है इसलिए वह स्कूल नहीं जा रहे हैं। वह सारा दिन कंचे, गोली खेलते रहते हैं और उनके अभिभावक काम में इतना बिजी हो जाते हैं कि वह अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। जिसके कारण उन बच्चों के अंदर से डर भी खतम हो हो जाता है। और वह पढ़ने की बजाय अपना पूरा दिन कंचों में बिता देते हैं। कंचो में उनको पैसे मिलते हैं तो उस पैसे से खाते-पीते नहीं हैं। वह उस पैसे से जुआं खेलना शुरू कर देते हैं। उनके अभिभावक भी काम की वजह से अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं, इसी का फायदा वो उठाते हैं।

पिता की मार से परेशान नूरसलाम, वह भी आजादी से अपना जीवन व्यतीत करना चाहता है

बातूनि रिपोर्टर अजीजुल, रिपोर्टर असलम

हरियाणा पत्रकार असलम ने बादशाहपुर की झुग्गियों का दौरा किया तो पत्रकार को पता चला कि एक बच्चा जिसका नाम नूरसलाम है वह सुबह-सुबह गाड़ी साफ करने का काम करता है।

पत्रकार ने उस बच्चे से बात करने के गए और उससे पूछा कि आप पढ़ने की उम्र में गाड़ी साफ करने का काम क्यों करते हो तो उसने बताया कि भैया मेरे परिवार में मेरे माता-पिता और मेरी एक बहन है। पिताजी ने मेरी माता जी

को छोड़ दिया। इससे मेरी माता जी को काम करने की जरूरत पड़ी और वह कोठियों में काम करने लगी।

कुछ सालों बाद मेरी माता जी ने एक आदमी से शादी कर ली और मेरे सौतेले पिता जी मुझसे बहुत नफरत करते हैं। वो ना ही मुझे पढ़ने देते हैं और ना ही मुझे कहीं बाहर खेलने के लिए जाने देते हैं और तो और मुझे मारते पीटते हैं। वह कहते हैं कि काम कर नहीं करोगे तो घर से भगा दूंगा, जहां जाना है वहां चला जा। अगर अपने दोस्तों के साथ मैं कहीं घूमने चला जाता हूं तो मेरे पिताजी कहते हैं कि उन्हीं दोस्तों के घर रहो, यहां क्यों आया है। वह मुझे घर से निकाल देते हैं। अगर मेरी माता जी मेरे पक्ष में कुछ बोलती हैं तो तो मेरे पिताजी मेरी माता जी को बहुत मारते हैं और उन्हें भी घर से बाहर निकाल देते हैं।

इसी वजह से मुझे गाड़ी साफ करने का काम करना पड़ता है, नहीं तो मैं भी चाहता हूं पढ़ना। लेकिन मजबूरी में गाड़ी साफ करता हूं और अब तो सोचता हूँ कि काश मैं भी आजादी से अपनी जिंदगी जी पाता।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

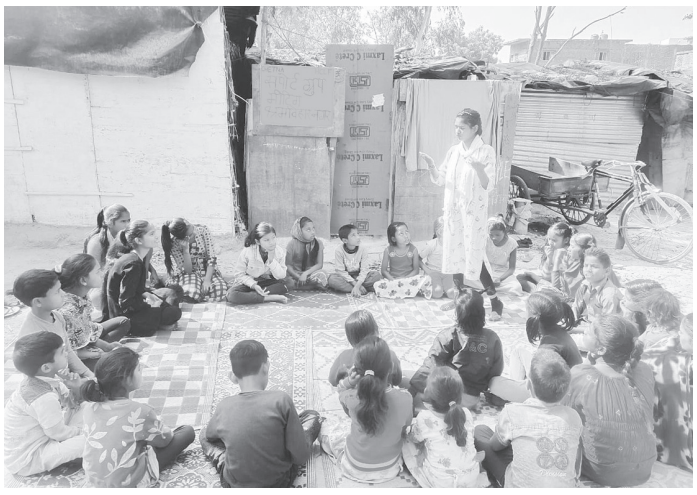

बड़ों की बातों का पड़ता है बच्चों पर प्रभाव

बातूनी रिपोर्टर शालू व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हम सभी जानते हैं कि बच्चों पर बड़े लोगों की अच्छी और गलत बातों का असर पड़ता है। बड़े लोग जैसे बात करते हैं, वैसे ही बच्चे सीखते हैं। हमारे बालकनामा पत्रकार ने लखनऊ में सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराई और बच्चों से बात की। बच्चों ने बताया कि दीदी हमारी बस्ती में कुछ ऐसे लोग हैं जो दारू पी लेते हैं और बहुत ही गंदी गंदी गालियां देना शुरू कर देते हैं और बहुत अनाप-सनाप बोलते हैं। उन्हीं से छोटे-छोटे बच्चे भी गालियां सीखते हैं और वह भी गालियां देना शुरू कर देते हैं। अधिकतर बच्चों को तो गालियों का मतलब भी नहीं पता होता है पर फिर भी वह गालियां देते रहते हैं। उनके चक्कर में छोटे-छोटे बच्चे गलत रास्ते पर जा रहे हैं। जब हम उन बच्चों को समझाते हैं तो वह बच्चे नहीं सुनते हैं। जब भी कहीं लड़ाई झगड़ा करते हैं तो वही गालियां देते हैं जो बड़े लोगों से सुनी होती हैं। बड़े लोगों की वजह से छोटे-छोटे बच्चे बिगड़ रहे हैं और गंदी गंदी गालियां सीख रहे हैं।

पिता के गुजर जाने के बाद मां के कन्धों पर आयी घर की सारी जिम्मेदारियां, बच्चों की पढ़ाई हुई प्रभावित

रिपोर्टर किशन

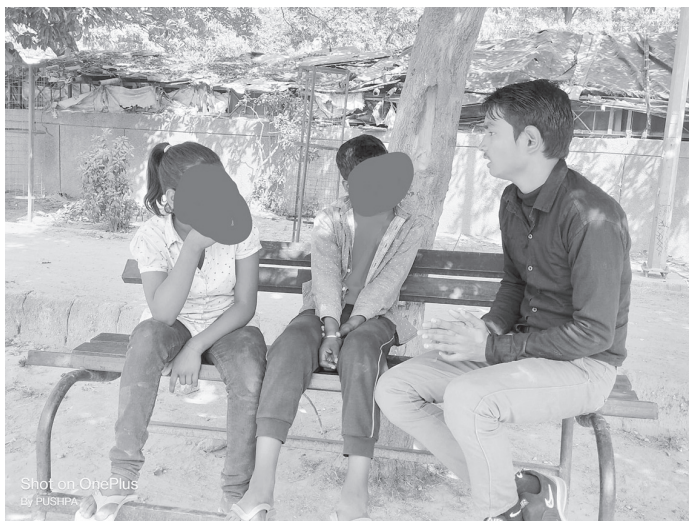

गरीब होना भी एक बड़ी मुसीबत की जड़ है। गरीबी के कारण कई परेशनियों का सामना करना पड़ता है जिस कारण अधिकतर लोग एवं बच्चे अपना सपना पूरा नहीं कर पाते। नॉएडा सेक्टर-62 की झुग्गी बस्ती में रह रही परिवर्तित नाम पूजा ने अपनी समस्यां बताई। पूजा 12 वर्ष की है जो अपने माता जी और नानी जी के साथ रहती है। पूजा की सेक्टर 62 में एक छोटी से चाय ,बिस्कुट ,गुटका ,बीड़ी,सिगरेट आदि की दुकान है। यह दुकान पूजा की माता जी और नानी जी चलाती है,कभी -कभी पूजा भी इस दुकान में हाथ बटवाने के लिए चली जाती है। पूजा चौथी क्लास में है। पूजा रोजाना सुबह आठ बजे से लेकर दोपहर के दो बजे तक स्कूल में रहती है और घर आकर पढाई और घर का कामकाज करती है है। समस्या यह है की पूजा के तीन भाई बहन है। जिसमे से पूजा सबसे छोटी है और तीनों भाई बहन प्राइवेट स्कूल में पढाई करते है। एक बच्चे की 1000 रूपए महीना फीस जाती है ,तीनों का मिलकर महीना का 3000 रूपए जाता है। पूजा के पिताजी की मृत्यु हो गई जिस कारण सारी जिम्मेदारी माताजी पर आ गई। अब स्कूल की फीस देने में काफी समस्या आ रही है और समय पर फीस जमा नहीं कर पा रहे हैं। जिस कारण पूजा के अध्यापकों ने पूजा और उसके बहन भाई को परीक्षा वाले दिन क्लास से निकाल दिया और परीक्षा नहीं देने दिया। पूजा का कहना है कि हम अपनी चाय की छोटी सी दुकान में इतना पैसा नहीं कमा पाते हैं कि हमारी माता जी इतने ज्यादा स्कूल की फीस हर महीने दे पाए। जब पिताजी थे तो माताजी और पिताजी दोनों ही कामकाज करते थे। तब हम अच्छे से पढ़ाई कर पा रहे थे पर अब हम कैसे पढ़ाई कर पाएंगे।

पिता की तबीयत खराब होने से सुरेश के ऊपर आयी घर की सारी जिम्मेदारियां

रिपोर्टर किशन

जैसे कि पूरा भारत जानता है कि घर की देखभाल करने वाले माता-पिता ही घर के मालिक होते हैं। यदि माता-पिता को कुछ दुख तकलीफ आ जाए तो बच्चों पर इसका प्रभाव पड़ता है। नोएडा सेक्टर 45 की झुग्गी बस्ती में रह रहा परिवर्तित नाम सुरेश अपने माता पिता के साथ रहता है। सुरेश के घर में 7 सदस्य हैं; 3 बहने, दो भाई और माता पिता। उसकी तीन बहनो का विवाह हो गया है। अब सुरेश और उसका छोटा भाई ही है। सुरेश के पिताजी सरकारी कर्मचारी और माताजी कोठी में कामकरती हैं। दो साल पहले सुरेश के पिताजी को मलेरिया हो गया था। सुरेश और उनकी माताजी ने सुरेश के पिताजी का बहुत इलाज करवाया। लेकिन वह ठीक ना हो पाए। घर की समस्या काफी बढ़ गई थी। लम्बे समय से छुट्टी पर होने के कारण सुरेश के पिताजी के काम से भी फोन आने लगे थे, लेकिन उन्हें जब बीमारी के बारे में बताया गया तो वह सुनने के लिए राजी नहीं थे। तब सुरेश की माताजी पिताजी को रिक्शे में बैठा कर रोज सड़क पर ले जाती और खुद झाड़ू लगाती और सुरेश के पिताजी को बगल में बिठाकर फोटो खींचकर उनके ऑफिस के ग्रुप में वह फोटो भेजती, तब जाकर ऑफिस वालों को शांति मिलती। वरना वह उनको ड्यूटी से हटाने की धमकी देते। इतने में घर का खर्चा ना चलने के कारण माता जी ने सुरेश को भी होटल में काम पर लगा दिया। सुरेश सुबह के 8 बजे से लेकर रात के १२ बजे तक होटल में खाना सप्लाई करने का काम करने लगा। सुरेश को पूरे महीने में 5000 रूपए मिलते थे। जिस होटल में सुरेश काम करता था उस होटल में और भी लोग काम करते थे। उनकी सैलरी भी ज्यादा थी और वो सुरेश पर रौब भी जमाते थे। वो उससे ज्यादा से ज्यादा काम करवाते थे और मना कर देता तो मालिक उसे मारता और होटल से हटाने की धमकी देता था। हद तो तब हो गई जब एक दिन सुरेश 5 मिनट अपने घर से आने में लेट हो गया और मालिक घर पर ही पहुंच गया और सुरेश से मिला और उसे धमकाने लगा। उसने होटल पर लाकर सुरेश को मारा भी और फिर दोबारा काम से हटाने की धमकी देने लगा। सुरेश से यह बात सहन ना हुई तो सुरेश ने कहा ठीक है मैं चला जाता हूं आप मेरे पैसे दे दो। लेकिन मालिक ने उसे और धमकाया और पैसे ना दिए। वो कहने लगा जो करना है कर ले और सुरेश को भगा दिया। कुछ दिन बाद सुरेश की माताजी होटल के मालिक के पास पहुंची और पैसे मांगे तो कुछ ही पैसे दिए, जिसमें से पांच हजार रुपए नहीं दिए। अब सुरेश घर पर ही रहता है और स्कूल जाता है। सुरेश के पिताजी की तबीयत अभी भी ठीक नहीं है।

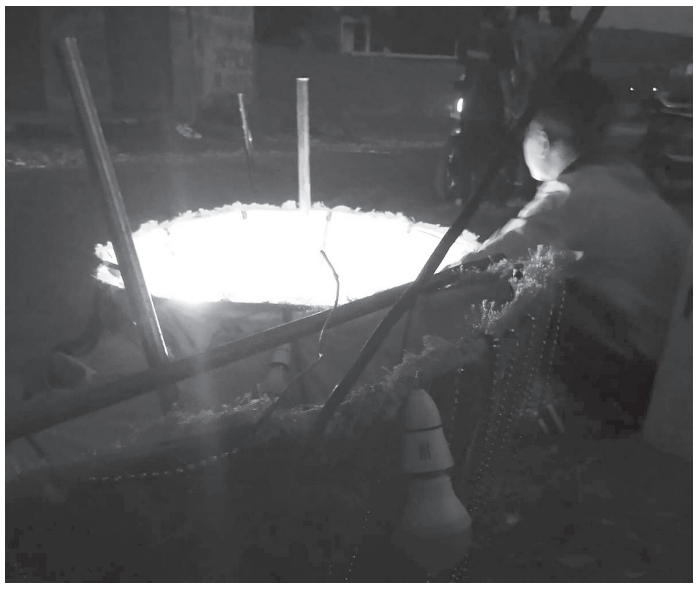

किराया देने के बाद भी गंदगी में रहने को मजबूर हैं बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

सड़क एवं कामकाजी बच्चे दिहाड़ी मजदूरी करके अपनी फेमिली का गुजारा करते है। बच्चे कितनी ही मेहनत क्यों न कर लें, लेकिन एक अच्छी जिंदगी नहीं जी पाते हैं। अगर वह फ्लाईओवरों या सड़कों के किनारे से हटके कहीं किराए पर कमरा भी लें तो उसकी कीमत उनकी आमदनी जितनी होती है। यदि वे किराये के कमरे में रहते हैं तो उनकी सारी आमदनी किराए में ही चली जाती है। जिसके बाद ना तो वह कुछ अच्छा खा सकते हैं, ना ही कुछ पी सकते हैं। इसलिए वह लोग ऐसा कमरा तलाश करके खुद को सड़कों पर रहने से बचाने की कोशिश करते हैं, जहां पर भले ही सुविधाएं कम हो लेकिन किराया सस्ता हो। लेकिन वहां की सुविधा इतनी कम होती है कि ना तो वहां पर नालियों में पानी निकासी का रास्ता होता है और ना ही अच्छा बाथरूम होता है। कमरे भी इतने बड़े नहीं होते कि जिसमें एक परिवार अच्छे से अपना जीवन यापन कर सके। फिर भी अपनी गरीबी और परिस्थिति के मद्देनजर वह बच्चे उन छोटे-छोटे कमरों में रहते हैं, जहां पर एक अच्छी फैमिली का व्यक्ति खड़ा होना भी पसंद नहीं करेगा। ऐसे ही कई परिवार नोएडा सेक्टर 52 की माता कॉलोनी में रहते हैं। जहां पर ना पानी निकासी का रास्ता है और ना ही वहां की कोई साफ सफाई करता है। जिस जगह बच्चे एवं उनके अभिभावक टॉयलेट करते हैं, वहां पर दरवाजा तक नहीं है, जिसकी वजह से हमेशा वो बीमारियों की चपेट में आते रहते हैं। मजबूरी यह है कि आमदनी इतनी नहीं है कि किसी अच्छी जगह पर कमरा लिया जा सके। इसीलिए यह सभी ना चाहते हुए भी वहां रहने को मजबूर हैं। मकान मालिक से भी यह लोग अक्सर इस बात की शिकायत करते हैं, लेकिन वह उनकी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नन्हें परिंदे बस की मुहीम रंग लायी और शिक्षा से वंचित मोहम्मद और सलमान का करवाया सरकारी स्कूल में दाखिला

ब्यूरो रिपोर्ट

बहुत लोगों के गांव में कमाने के अच्छे संसाधन ना होने की वजह से वो शहरों की ओर पलायन कर लेते हैं, जिसकी वजह से बच्चों का भविष्य खराब हो जाता है। वह लोग कमाने के कारण समय-समय पर अपना घर, शहर और राज्य बदलते रहते हैं। जिस वजह से बच्चे स्थाई रूप से कहीं भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। आज हम आपको अपनी बालकनामा खबर के माध्यम से दो ऐसे ही भाइयों के बारे में बताएंगे, जिनकी उम्र 9 साल और 8 साल है। ये दोनों भाई आज तक कभी स्कूल नहीं गए। दोनो भाईयों का परिवर्तित नाम मोहम्मद और सलमान है, जो जिला भागलपुर, गांव मेहरपुर, बिहार के रहने वाले हैं। मोहम्मद और सलमान के परिवार में दो बहन तीन भाई माता-पिता

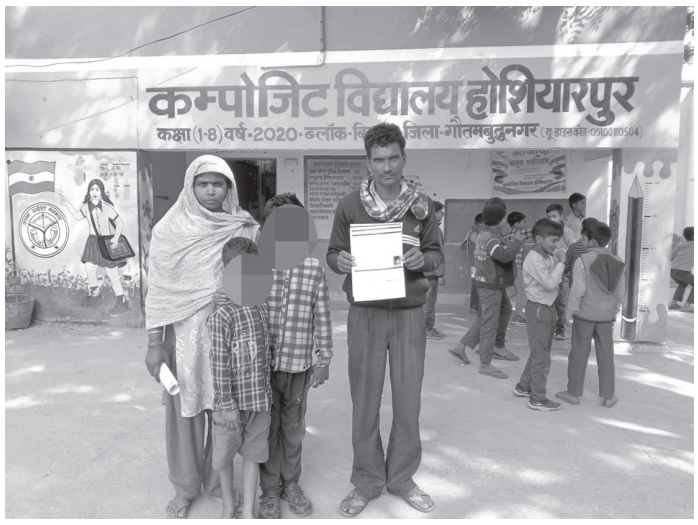

कुल 7 सदस्य हैं। गांव में सलमान के पिता का कोई आमदनी का अच्छा स्रोत ना होने की वजह से वह एवं उनका परिवार 6 महीने पहले नोएडा के सेक्टर 52 में आकर बस गए थे। बच्चों के पिता ई रिक्शा चला कर अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं एवं माता जी घर का कामकाज और बच्चों की देखभाल करती हैं।

मोहम्मद और सलमान अपने गांव में सारा दिन यहां वहां घूमते रहते थे। एवं घर के कामों में अपनी माता जी का हाथ बंटाते थे। बाद में वह अपने परिवार के साथ दिल्ली आ गए और यहां पर भी उनका जीवन पहले की तरह ही चल रहा था। सारा दिन यहां वहां घूमना और घर के कामकाज करना। दोनो भाई कभी स्कूल नही गए और ना ही उन्हें कुछ लिखना या पढ़ना आता था। फिर नन्हे परिंदे बस के मोबिलाइजर को मोहम्मद और सलमान आउटरीच के दौरान कुछ बच्चों के साथ कंचे खेलते हुए मिले। जिसके बाद कार्यकर्ता ने बच्चों से बातचीत की एवं उन्हें नन्हे परिंदे बस के बारे में बताया और बस पर ले जाकर भ्रमण भी कराया। जिसके बाद बच्चे अपने माता पिता को लेकर अपना नाम लिखवाने के लिए बस पर आए। और नवंबर, 2022 में मोहम्मद और सलमान का दाखिला नन्हे परिंदे बस में कर लिया गया। जिसके बाद से दोनों भाई हमेशा बस पर पढ़ाई करने आते हैं। अब वह अपने छोटे भाई को भी बस पर लाने लगें है। साथ ही मोहम्मद एवं उसके भाई सलमान को अब 1 से लेकर 20 तक गिनती एवं छोटे अ से लेकर अं तक लिखना और पढ़ना आने लगा है। अब दोनों भाइयों का दाखिला सेक्टर 52 स्थित होशियारपुर के सरकारी स्कूल में कक्षा दो और चार में करवाया गया है। जिसके बाद दोनों ही बच्चे काफी खुश है और हमेशा स्कूल जाते है। जब उन्हें समय मिलता है तो वह बस पर भी आकर पढ़ाई लिखाई करते है।

मालिक के अत्याचार से बच्चे हुए परेशान

ब्यूरो रिपोर्ट

हम रोजाना सड़कों पर आते जाते अपनी गलियों में यह जरूर देखते हैं कि खाने की ठेली पर अनेक बच्चे काम कर रहे होते हैं। नोएडा सेक्टर 126 के कुछ ऐसे बच्चे अनेक ठेलीयों पर काम कर रहे बालक नामा के पत्रकारों ने बातूनी रिपोर्टर 14 वर्ष परिवर्तित नाम किशन से बात की । बातूनी रिपोर्टर किशन ने बताया कि वह सेक्टर 126 में ही रहता है। जब वह अपने स्कूल और घर के कामकाज के लिए बाहर आता जाता है तो वह यह देखता है कि एक 10 वर्ष बालक जो नान बनाने की ठेली पर काम करता है। इतना सुनकर पत्रकार उस बालक के पास पहुंचे और उससे उसकी परेशानी के बारे में पूछा । बालक की उम्र 10 वर्ष है और वह बिहार का रहने वाला है । वह नान की ठेली पर काम करता है यह एक अनोखा बच्चा नहीं जो बिहार से आकर अकेला काम करता है, ऐसे अनेक बच्चे हैं जो आसपास की ठेलीयों पर अलग-अलग काम करते हैं। बालक के माता-पिता गांव में रहते हैं और जो बालक का मालिक है वह बच्चे को बिहार से माता-पिता से बात करके नोएडा काम के लिए लेकर आ गया। बालक अपने मालिक के साथ ही रहता है। सुबह 6:00 बजे से लेकर शाम के 4:00 बजे तक नान की ठेली लगाना पड़ता है।

बालक को महीने में 6000 मिलते हैं जो कि वह बालक वह पैसे अपने माता पिता को भेज देता है। पर समस्या यह आती है कि काम करने के बाद भी मालिक गलतियों पर गलतियां निकालता है। और हम कुछ कहे तो मारना शुरू कर देता है। नान तंदूर में पकाने के दौरान हाथ भी जल जाते हैं पर उसे मालिक को यह दर्द समझ में नहीं आता हम जब कहते हैं कि आज मैं काम नहीं करूंगा तो भगाने की धमकी देता है। एक दिन ऐसा नहीं जाता कि वह बिना मारे,बिना गलती निकाले रह जाए। जो मेरे गांव के अनेक बच्चे थे उनके मालिक भी उन पर अत्याचार करता था इस कारण वह भी भाग गए हैं अब मैं भी यही करूंगा।

अभिभावकों के अंधविश्वास की वजह से कहीं किसी मासूम की जान पर न बन आए

बातूनी रिपोर्टर मीनाक्षी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

ऐसी बहुत सी बीमारियां हैं जो कि वायु से फैलती हैं; जैसे हैजा, महमारी, बुखार,चेचक। बालकनामा पत्रकार ने लखनऊ बस्ती के बच्चों के साथ रिपोर्टर बैठक कराई और बच्चों से बात की तो बच्चे ने बताया कि आजकल चिकनपॉक्स नाम की बीमारी बहुत ही ज्यादा फैल रही है। जिसके कारण बहुत लोग बीमार पड़े हुए हैं। इस कारण से बहुत समस्या हो रही है और बच्चे कमजोर होते जा रहे हैं। इस बीमारी से बच्चों को ज्यादा दिक्कतें हो रही हैं। बच्चों के अभिभावक दवाई भी लेने नहीं जाते। उनको यह लगता है कि देवी मैया हैं ये और अगर हम दवाई करेंगे तो हमारा बच्चा मर जाएगा। इस डर की वजह से वह दवाई भी लेने नहीं जाते हैं। लेकिन इन्हे यह नहीं पता है कि यह एक प्रकार की बीमारी है जो वायु द्वारा फैलती है, जिस से बच्चे की मृत्यु भी हो सकती है।

लड़के और लड़की में भेदभाव से स्कूल न जा पायी रोशनी

बातूनी रिपोर्टर अंजलि व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

रोशनी नाम की लड़की थी, जिसके दो भाई, बहन थे। उसका भाई स्कूल जाता था, लेकिन वह स्कूल नहीं जाती थी। क्योंकि उसके माता-पिता उसको स्कूल नहीं भेजते थे। उन्हें लगता था कि यह भी उन लड़कियों जैसी ना निकल जाए, जो एकतरफा प्यार की वजह से अपने माता पिता को छोड़कर भाग जाए। इसकी वजह से वो मुझे स्कूल नहीं भेजती हैं। जब भी मेरा भाई स्कूल जाता था तो मेरा भी मन करता था। मैं भी अपनी मम्मी पापा से बोलती थी कि मुझे भी स्कूल भेजो तो इस बात को लेकर मुझे बहुत मारती थी और घर का और बाहर का काम करवाती थी। जब मैं काम के लिए मना कर देती तो जबरदस्ती काम करवाती थी। जब मैं बोलती थी कि भाई भी तो काम कर सकता है तो उस बात पर मरते थे। जब मेरे छोटे भाई ने मम्मी पापा को बोला कि आप लड़का और लड़की में क्यों भेदभाव करते हो, जितना प्यार मुझे करते हो इतनी दीदी को क्यों नहीं करती और दीदी को बाहर काम करने के लिए क्यों भेजती हो ? दीदी भी तो पढ़ लिखकर अपने सपना पूरा करना चाहती है जैसे मैं करना चाहता हूं। आप मुझे स्कूल भेज रहे हो, वैसे दीदी को भी स्कूल जाने दो ताकि वह अपने सपने पूरे कर सके। जितना प्यार आप मुझे देते हैं दीदी को दीजिए। आपको लड़का और लड़की में भेदभाव नहीं करना चाहिए। मम्मी पापा तो बाहर के भी बहकावे में आ जाते हैं, अगर इनको किसी बाहर वाले ने समझा दिया कि आप कितनी भी कोशिश कर लो लेकिन ये पढ़ाई करके क्या करेगी। अगर मैं स्कूल जाती तो अब तक मैं कक्षा 10 में होती।

पैसों के लालच में बच्चे खेलते हैं ताश, घरवाले भी नहीं लगते पाबन्दी

बातूनी रिपोर्टर विक्की
बालक नामा रिपोर्टर असलम

बादशाहपुर की झुग्गियों के दौरान जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने देखा कि कुछ बच्चे है जो कि जुआ खेल रहे है। हमारे बालकनामा पत्रकार ने उनमे से एक बच्चे से बात करी तो उस बच्चे ने बताया तो उस बच्चे ने बताया कि भैया कि मैं यहां सुबह आठ बजे आता हूं और यहां कम से कम हर दिन 50 से 40 बच्चे ताश खेलने के लिए आते हैं और मैं भी यहां रोजाना आता हूँ क्यूंकि मैं कभी 200 रूपए कभी 3000 रूपए जीत कर ले जाता हूँ। मेरे घरवाले भी मुझे मना नहीं करते क्यूंकि यहाँ से जीते हुए पैसे मैं अपने घर पर दे देता हूँ इसीलिए मेरे घरवाले खुश होकर मुझे ताश खेलने के लिए भेज देते हैं।

बालकरनाम पत्रकारों ने उस बच्चे से कहा कि आप यहां कितने देर तक ताश खेलते हो तो उस बच्चे ने बताया कि भैया यहां मैं कभी कबार रात के आठ बजे से लेकर रात ग्यारह बजे तक ताश खेलते है जो भी व्यक्ति या बच्चा यहां पर ताश खेलते हुए ज्यादा पैसे जीत जाता है तो उस बच्चे को जब तक नहीं जाने देते तब तक वो खुद न हर जाए या फिर सब को हरा ना दे। एक बार मैं ताश में 5000 रूपए हार गया था तो मैं अगले दिन यहां ताश खेलने के लिए नहीं आया तो जो बच्चे मेरे साथ ताश खेलते हैं ,वह मेरे घर पर आए और मुझे बातों में उलझा कर ताश खेलने के लिए ले गए और अगर मेरे पास पैसे नहीं होते तो वह लोग मुझे उधार देते और मुझे खिलाते अगर मैं उधार के पैसे उन्हें नहीं दे पाता ,तो वह मेरे घर में मेरे माताजी पिताजी से लेते और मेरे माता जी और मेरे पिताजी मुझे बहुत मारते हैं। इसलिए मुझे अब ताश खेलना अच्छा नहीं लगता परंतु मेरे दोस्तों के कारण मुझे ताश खेलना पड़ता है

मोनू चाहता है पढ़ना परंतु मजबूरी के कारण लगाता है अंडे की रेडी

बातूनी रिपोर्टर मोनू
बालकनामां रिपोर्टर असलम

आज मैं आप सभी को एक ऐसे लड़के के बारे में बताने जा रहा हूं जिसने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया है। जिसका नाम मोनू है और वह 9वी कक्षा का छात्र है उसके पिताजी एक नाई है परंतु उसके पिताजी ज्यादा उमर हो जाने के कारण अब ज्यादा काम नहीं कर सकते। इसलिए मोनू ने एक अंडे की रेडी लगाई जब हमारे बालकनामां पत्रकार मोनू की रेडी पर गए तो हमने मोनू से पूछा कि आपको यह काम कैसा लगता है तो मोनू हंसते हुए कहा कि भैया मुझे यह काम करना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि इससे मेरा घर का खर्च चल पाता है और मुझे अपने घर की

जिम्मेदारी भी मिल चुकी है। अगर मैं नहीं कमाऊंगा तो मेरे घर का खर्चा कैसे चलेगा फिर मोनू ने बताया कि जब उसने पहली बार अपनी रेडी लगाई थी ,तो मुझे बहुत मेहनत करनी पडी थी । सुबह सुबह उठो , सामान लाओ ,बनाओ और मुझे इतना ज्ञान भी नहीं था और तो और मेरी रेडी पर ज्यादा ग्राहक भी ना आने के कारण मेरा काम थोड़ा कम चला परंतु फिर मेरे बहुत ज्यादा मेहनत करी और अब मुझे यह काम बहुत अच्छा लगता है परंतु इससे मेरी पढ़ाई पर बहुत असर पड़ता है। फिर भी मैं अपनी मजबूरी के कारण अंडे की रेडी पर काम करता हूं। मेर। नौवीं कक्षा के पेपर आने वाले हैं इसमें मेरी बहुत पढ़ाई नहीं हो पाती है। मगर मैं चाहता हूं की मेरे पिता जी की उम्र लम्बी हो।

क्या गुड्डू भी पढ़ पायेगा ?

बातूनी रिपोर्टर गुड्डू बालकनामा रिपोर्टर असलम

जैसा कि आप सभी को पता ही होगा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे कितने मेहनती होते है। जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने बादशाहपुर के कुछ बच्चों से बातचीत की जो की शादी-विहा और सेवा के काम में जाते है। उनमे से एक बच्चे का नाम गुड्डू जोकि बारात में बैंड में धक्का लगाने का काम करता और वह नौवीं कक्षा में पढ़ रहा है। परंतु उसकी माताजी उसे हमेशा काम करने के लिए कहती रहती इसलिए गुड्डू बैंड में धक्का लगाने का काम और रात में लाइट पकड़ने का काम करता है। जब हमने उससे पूछा की आप को इन कामों में क्या परेशानी आती है तो गुड्डू ने बताया की भैया कभी कभी बैंड में धक्का लगाते समय मेरे पैर में बैंड का टायर चढ़ जाता है और कभी कभी बाराती लोग मेरी लाइट पर कूद जाते जिससे वो टूट जाती है और मेरे मालिक मेरे पैसे काट लेते है।

मेरे मालिक कभी कभी मुझे मारते भी है। परंतु में घबराता नहीं हूँ और मेहनत करता रहता हूँ। कभी कबर में बैंड के काम पर या कभी लाइट के काम पर चला जाता हूँ। वह यह कहता है की में यह काम अपनी माता जी के कहने के कारण करता हूँ नहीं तो मुझे भी अपने दोस्तों की तरह स्कूल जाना चाहता हूँ।

पिता के नशे के कारण अंकुश का उजड़ा भविष्य

ब्यूरो रिपोर्ट

हरियाणा पत्रकार असलम ने पलडा जोगियों का दौरा किया। तब हमारे पत्रकारों को पता चला कि एक बच्चा जिसका नाम अंकुश है उसके पिता मुस्लिम और माताजी हिंदू है। उसकी एक बड़ी बहन भी है। घर में उसके पिताजी बहुत ज्यादा दारु पीने के कारण उसकी माता जी और बड़ी बहन को बहुत ज्यादा मारते हैं। अंकुश 7 साल का है और वह पहले पढ़ता था, लेकिन पिताजी के ज्यादा दारु पीने के कारण वह पढ़ नहीं सकता। उसकी माताजी इसी कारण अपना घर छोड़कर चली गयी। उसके बाद उसके पिताजी अंकुश और उसकी बड़ी बहन को मारने लगे। इसलिए अंकुश एक मोमोज की दुकान पर काम करने लगा। अंकुश से जब हमारे पत्रकार मिले तो उससे पूछा कि आपको एक मौका मिले तो आप बड़े होकर क्या बनोगे तो अंकुश ने कहा कि भैया मैं तो पढ़ना चाहता हूं और पढ़ लिख कर एक अच्छा काम करना चाहता हूं।

कुछ बाइक सवार व्यक्ति करते हैं बच्चों से फोन चोरी

बातूनी रिपोर्टर सुमन
बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा का पत्रकार असलम ने जब घाटा गांव का दौरा किया तो सड़क एवं कामकाजी बच्चों से उनकी समस्याएं पूछी तो एक बच्चे ने बताया भैया हमारे यहां पर रात को कुछ बदमाश लोग आते हैं। जो हमसे फोन छीन कर ले जाते हैं। एक दिन मेरे भैया और मैं रोड पर से जा रहे थे तभी कोई बाइक से आया और उसके साथ एक लड़का पीछे बैठा था जो मेरे हाथ से मोबाइल छीन कर भाग गया। हमारे यहां पर एक दिन एक बड़े बुजुर्ग और एक छोटी सी बच्ची साइकिल पर जा रहे थे और बच्ची के हाथ में पर्स था तभी कुछ बदमाश बाइक पर आए और बच्चे की हाथ से पर्स को छीन लिया जिससे पूरी साइकिल गिर गई और बच्ची के पैर और हाथ छिल गए और बड़े बुजुर्ग के

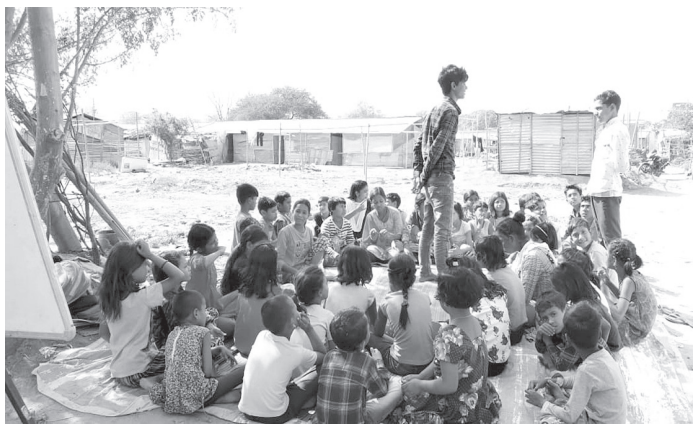

एक उंगली टूट गई जिससे कि उनको बहुत ज्यादा नुकसान हुआ। मेरी माता जी एक दिन कोठी से काम करके आ रही थी और फोन पर बात कर रही थी तभी एक आदमी बाइक से आया और मेरी माता जी के कान से फोन लेकर भाग गया मेरी माताजी चिल्ला रही थी रो रही थी तब भी किसी ने मेरी माता जी की मदद नहीं की और मेरी माता जी के फोन में ढेर सारे पैसे थे वह भी लेकर भाग गए हम लोग यह चाहते हैं कि जो बाइक में आते हैं और हमारे फोन छीन कर ले जाते हैं उन पर सख्त से सख्त कार्रवाई हो।

राजा को मिली पिता के अत्याचारों से आजादी

बातूनी रिपोर्टर मोनू
बालकनामां रिपोर्टर असलम

आज हम आपको एक ऐसी लड़के के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसने अपने जीवन में बहुत ज्यादा संघर्ष किया। राजा (परिवर्तित नाम) की उम्र 17 साल है और सातवीं कक्षा में पढ़ता था। पिताजी के अत्याचार के कारण राजा का पढ़ाई में मन ना लगा। उसके पिताजी उसे अपने अंडे की रेडी पर काम करवाते थे इसी वजह से वह पढ़ ना सका। एक दिन परेशान होकर राजा ने अपने घर को छोड़कर एक किराए का रूम लिया और एक मेडिकल शॉप में काम पर लग गया। राजा मेडिकल शॉप पर 10000 रूपए महीना कमाता है और कभी-कभी डिलीवरी

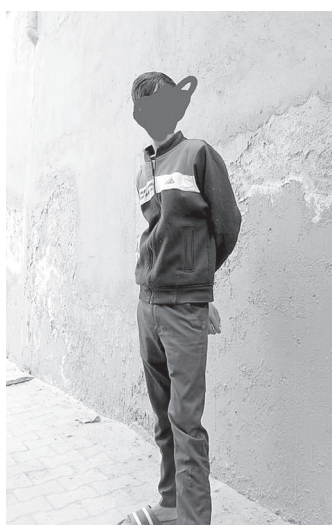

के काम पर भी चला जाता है। वह अपने साथ-साथ घर पर भी पैसा भेजता है। हमारे पत्रकारों ने राजा से पूछा कि अब आपको यह काम करना कैसा लगता है तो राजा ने बताते हुए कहा कि पहले मैं अपने पिताजी के साथ रहता था और मेरे पिताजी मुझे बहुत मारते थे जिससे कभी कभार मुझे बुखार भी आ जाता था और मैं बेहोश भी हो जाता था। इसी वजह से मैं अब किराए के रूम में रहता हूं और खुद काम करता हूं। अब मैं चैन से अपनी जिंदगी गुजार रहा हूं। राजा चाहता है कि अगर उसके पिताजी अच्छे होते और उसके बारे में सोचते तो आज राजा अपने पिताजी और अपने घर वालों से दूर ना रह कर उनके साथ रहता। और क्या पता राजा का मन पढ़ाई में भी लग जाता।

माता पिता के झगड़े के कारण बच्चे हुए आपने अधिकारों से वंचित

बातूनी रिपोर्टर शालू व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

रागिनी ,पूनम और संदीप रोजाना चेतना संस्थान में आया करता था परन्तु जब वह कुछ दिनों से नहीं आये तो चेतना के कार्यकर्ता उनका घर का पता ढूंढा। जब वह उनके घर पुँहचे तो देखा कि वहां पर ताला लगा हुआ है। आस पास के लोगों से पूछने पर पता चला कि कुछ दिन पहले उनके माता पिता का झगड़ा हुआ था। संदीप पता नहीं किस अनजान जगह पर रहने लगा फिर कार्यकर्ता ने बच्चों के पिता से इस बारे में जानकारी ली तो पता चला कि उनकी आपस में कोई बात पर बहस हुई जिसके कारण उनकी माता अपने बच्चों को लेकर गाँव चली गई। उनके पिता ने बताया की सब बचे अब गाँव चले गए है अब वही पर रह कर पढाई करेंगे।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं।
संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471